यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रांति

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सामाजिक परिवर्तन की विचारधाराएँ: उदारवादी, रैडिकल और रूढ़िवादी

प्रश्न 1 (आसान). रूढ़िवादी (Conservatives) बदलाव की प्रक्रिया को कैसा रखना चाहते थे?
उत्तर – रूढ़िवादी अतीत का सम्मान करते हुए बदलाव की प्रक्रिया को धीमी (gradual) रखना चाहते थे।

प्रश्न 2 (आसान). कौन सा समूह महिला मताधिकार आंदोलन का समर्थक था?
उत्तर – रैडिकल (Radical) समूह महिला मताधिकार आंदोलन का समर्थक था।

प्रश्न 3 (मध्यम). उदारवादी (Liberals) और रैडिकल (Radicals) के बीच संपत्ति के स्वामित्व को लेकर क्या मुख्य अंतर था?
उत्तर – उदारवादी निजी संपत्ति का समर्थन करते थे और केवल संपत्तिधारियों को वोट का अधिकार देना चाहते थे, जबकि रैडिकल निजी संपत्ति के विरोधी तो नहीं थे लेकिन संपत्ति के कुछ ही हाथों में संकेंद्रण (concentration) के सख्त खिलाफ थे।

प्रश्न 4 (कठिन). क्या 19वीं सदी के उदारवादियों को 'लोकतंत्रवादी' कहा जा सकता है? कारण स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – नहीं, उन्हें 'लोकतंत्रवादी' नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (सभी को वोट देने के अधिकार) के विरोधी थे और केवल संपत्तिधारी पुरुषों को ही वोट का अधिकार देना चाहते थे।

» औद्योगिक समाज और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन

प्रश्न 5 (आसान). औद्योगिक क्रांति के समय मज़दूरों के कार्य-घंटों की क्या स्थिति थी?
उत्तर – काम के घंटे अत्यधिक लंबे होते थे और मज़दूरी बहुत कम मिलती थी।

प्रश्न 6 (आसान). शहरों में तेज़ी से आबादी बढ़ने के कारण कौन सी बुनियादी समस्या पैदा हुई?
उत्तर – आवास (रहने की जगह) और साफ-सफाई की गंभीर समस्या पैदा हुई।

प्रश्न 7 (मध्यम). उदारवादी और रैडिकल विचारक मज़दूरों की स्थिति में सुधार क्यों चाहते थे?
उत्तर – क्योंकि वे स्वयं उद्योगपति थे और उनका मानना था कि स्वस्थ और शिक्षित मज़दूर ही अर्थव्यवस्था और उद्यम को अधिक लाभ पहुँचा सकते हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). औद्योगीकरण ने 19वीं सदी के यूरोप की सामाजिक संरचना को किस प्रकार बदला?
उत्तर – गाँव से शहरों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हुआ, जिससे एक नया मज़दूर वर्ग और उद्योगपतियों का वर्ग उभरकर सामने आया और पुराने जन्मजात विशेषाधिकारों की जगह व्यक्तिगत प्रयास व पूँजी का महत्व बढ़ गया।

» यूरोप में समाजवाद और कार्ल मार्क्स का विचार

प्रश्न 9 (आसान). समाजवादी विचारक निजी संपत्ति को किस चीज़ की जड़ मानते थे?
उत्तर – सभी सामाजिक समस्याओं की जड़।

प्रश्न 10 (आसान). कार्ल मार्क्स के अनुसार औद्योगिक समाज किस प्रकार का समाज था?
उत्तर – पूँजीवादी (Capitalist) समाज।

प्रश्न 11 (मध्यम). रॉबर्ट ओवेन और लुई ब्लांक के विचारों में मुख्य अंतर क्या था?
उत्तर – ओवेन व्यक्तिगत पहल से को-ऑपरेटिव समुदाय बनाना चाहते थे, जबकि लुई ब्लांक चाहते थे कि सरकार आगे बढ़कर सामूहिक उद्यमों को बढ़ावा दे।

प्रश्न 12 (कठिन). कार्ल मार्क्स के 'कम्युनिस्ट समाज' की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।
उत्तर – मार्क्स का कम्युनिस्ट समाज एक ऐसा समाज था जहाँ निजी संपत्ति का नामोनिशान न हो, उत्पादन के सभी साधनों पर पूरे समाज का साझा नियंत्रण हो, और पूँजीवादी शोषण पूरी तरह समाप्त हो चुका हो।

» अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाजवाद का प्रसार

प्रश्न 13 (आसान). समाजवादियों ने अपने प्रयासों में समन्वय लाने के लिए किस अंतर्राष्ट्रीय संस्था का गठन किया था?
उत्तर – द्वितीय इंटरनेशनल (Second International)

प्रश्न 14 (आसान). ब्रिटेन में 1905 में समाजवादियों और ट्रेड यूनियन आंदोलनों ने मिलकर किस पार्टी का गठन किया?
उत्तर – लेबर पार्टी (Labour Party)

प्रश्न 15 (मध्यम). जर्मनी में मजदूरों के संगठनों के किस राजनीतिक पार्टी के साथ गहरे संबंध थे?
उत्तर – सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी (SPD)

प्रश्न 16 (कठिन). 1914 तक यूरोप में संसद में प्रभाव बढ़ाने के बावजूद समाजवादी सरकार क्यों नहीं बना पाए?
उत्तर – क्योंकि संसदीय चुनाव जीतने और कानून बनवाने में योगदान देने के बावजूद मुख्य सत्ता पर रूढ़िवादियों, उदारवादियों और रैडिकलों का ही वर्चस्व बना रहा।

» रूसी साम्राज्य (1914): अर्थव्यवस्था, समाज और किसान

प्रश्न 17 (आसान). 1914 में रूस पर किसका शासन था?
उत्तर – जार निकोलस द्वितीय का।

प्रश्न 18 (आसान). 1914 में रूस की कितनी प्रतिशत जनता आजीविका के लिए खेती पर निर्भर थी?
उत्तर – लगभग 85 प्रतिशत।

प्रश्न 19 (मध्यम). रूसी किसानों की 'मीर' (Commune) व्यवस्था क्या थी?
उत्तर – मीर किसानों का एक समूह या कम्यून था, जहाँ किसान अपनी ज़मीन सौंप देते थे और कम्यून परिवार की ज़रूरत के हिसाब से ज़मीन का पुनर्वितरण करता था।

प्रश्न 20 (कठिन). फ्रांसीसी क्रांति के किसानों और रूसी किसानों के व्यवहार में क्या मुख्य अंतर था?
उत्तर – फ्रांसीसी किसान नवाबों का सम्मान करते थे और उनके लिए लड़े भी, जबकि रूसी किसान सामंतों का सम्मान नहीं करते थे, लगान देने से मना करते थे और ज़मीन छीनना चाहते थे।

» रूस में राजनीतिक संगठन: बोल्शेविक और मेन्शेविक

प्रश्न 21 (आसान). रशियन सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर्स पार्टी का गठन किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1898 में।

प्रश्न 22 (आसान). बोल्शेविक गुट के मुख्य नेता कौन थे?
उत्तर – व्लादिमीर लेनिन।

प्रश्न 23 (मध्यम). बोल्शेविक और मेन्शेविक शब्दों का शाब्दिक अर्थ क्या है?
उत्तर – बोल्शेविक का अर्थ 'बहुमत' (Majority) और मेन्शेविक का अर्थ 'अल्पमत' (Minority) है।

प्रश्न 24 (कठिन). जार के शासनकाल में लेनिन पार्टी को अनुशासित और सीमित क्यों रखना चाहते थे?
उत्तर – क्योंकि रूस में जार का दमनकारी शासन था और गुप्त रूप से काम करने के लिए केवल निष्ठावान एवं अनुशासित क्रांतिकारियों की ही आवश्यकता थी।

» 1905 की क्रांति और 'खूनी रविवार'

प्रश्न 25 (आसान). रूस में किस घटना को 'खूनी रविवार' के नाम से जाना जाता है?
उत्तर – 1905 में पादरी गैपॉन के नेतृत्व में मजदूरों के शांतिपूर्ण जुलूस पर जार की पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी को।

प्रश्न 26 (आसान). 1905 की क्रांति के बाद जार ने किस संसद के गठन की सहमति दी?
उत्तर – ड्यूमा (Duma)

प्रश्न 27 (मध्यम). ज़ार ने पहली ड्यूमा को 75 दिन के भीतर ही क्यों बर्खास्त कर दिया?
उत्तर – क्योंकि वह अपनी निरंकुश सत्ता पर किसी भी प्रकार का अंकुश या जवाबदेही बर्दाश्त नहीं करना चाहता था।

प्रश्न 28 (कठिन). 1905 की क्रांति ने 1917 की महान रूसी क्रांति की नींव कैसे रखी?
उत्तर – इसने ज़ार की निरंकुशता का पर्दाफाश किया, मजदूरों और मध्यम वर्ग को एकजुट किया, और ड्यूमा के गठन के बावजूद जनता को यह समझ आ गया कि जार वास्तविक बदलाव नहीं चाहता।

» पहला विश्वयुद्ध और जारशाही का संकट

प्रश्न 29 (आसान). प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान सेंट पीटर्सबर्ग शहर का नाम बदलकर पेत्रोग्राद क्यों रखा गया?
उत्तर – क्योंकि 'सेंट पीटर्सबर्ग' एक जर्मन नाम था और युद्ध के दौरान रूस में जर्मनी-विरोधी भावनाएँ बहुत तीव्र थीं।

प्रश्न 30 (आसान). विश्वयुद्ध के समय ज़ार की अलोकप्रियता बढ़ाने में किस संन्यासी की भूमिका थी?
उत्तर – रासपुतिन नामक संन्यासी की।

प्रश्न 31 (मध्यम). रूसी सेना ने पीछे हटते समय अपनी ही फसलों और इमारतों को क्यों नष्ट किया?
उत्तर – ताकि आगे बढ़ती हुई दुश्मन की जर्मन सेना वहाँ टिक न सके और उसे भोजन या आश्रय न मिल सके।

प्रश्न 32 (कठिन). प्रथम विश्वयुद्ध का रूस की औद्योगिक स्थिति और नागरिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – विदेशी आपूर्ति रुकने से कारखाने बंद हुए, रेलवे लाइनें टूटने लगीं, श्रमबल की कमी हुई और सारा अनाज सेना को भेजे जाने के कारण शहरों में रोटी के लिए भीषण दंगे होने लगे।

» पेत्रोग्राद में फरवरी क्रांति (1917)

प्रश्न 33 (आसान). रूस में किस दिन महिला कामगारों की अगुवाई में बड़े पैमाने पर हड़ताल हुई थी?
उत्तर – 23 फरवरी 1917 (जो बाद में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में जाना गया)।

प्रश्न 34 (आसान). ज़ार निकोलस द्वितीय ने किस तारीख़ को अपनी गद्दी छोड़ी (पदत्याग किया)?
उत्तर – 2 मार्च 1917 को।

प्रश्न 35 (मध्यम). फरवरी क्रांति के दौरान सिपाहियों ने विद्रोह क्यों किया और इसका क्या परिणाम हुआ?
उत्तर – सिपाही भी युद्ध और भुखमरी से परेशान थे; उन्होंने हड़ताली मज़दूरों पर गोली चलाने से मना कर दिया और उनके साथ मिलकर 'पेत्रोग्राद सोवियत' का गठन किया।

प्रश्न 36 (कठिन). फरवरी क्रांति को एक 'स्वतःस्फूर्त' (spontaneous) जनक्रांति क्यों माना जाता है?
उत्तर – क्योंकि इसका संचालन या योजना किसी एक राजनीतिक दल ने नहीं बनाई थी, बल्कि यह अनाज की किल्लत और तालाबंदी से परेशान आम मज़दूरों व महिलाओं द्वारा स्वतः शुरू हुआ आंदोलन था।

» लेनिन की 'अप्रैल थीसिस'

प्रश्न 37 (आसान). लेनिन किस पार्टी के नेता थे?
उत्तर – बोल्शेविक पार्टी

प्रश्न 38 (आसान). लेनिन रूस कब वापस लौटे?
उत्तर – अप्रैल 1917 में

प्रश्न 39 (मध्यम). लेनिन की 'अप्रैल थीसिस' में कौन-कौन सी तीन माँगें शामिल थीं?
उत्तर – 1. युद्ध समाप्त करना, 2. ज़मीन किसानों को देना, 3. बैंकों का राष्ट्रीयकरण करना।

प्रश्न 40 (कठिन). शुरुआत में बोल्शेविक पार्टी के सदस्य लेनिन की 'अप्रैल थीसिस' से सहमत क्यों नहीं थे?
उत्तर – वे सोचते थे कि अभी अंतरिम सरकार का समर्थन करने का सही समय है और समाजवादी क्रांति के लिए परिस्थितियाँ पूरी तरह परिपक्व नहीं हुई हैं।

» अक्टूबर 1917 की क्रांति

प्रश्न 41 (आसान). अक्टूबर 1917 की क्रांति के समय सैनिक क्रांतिकारी समिति का नेतृत्व किसने किया था?
उत्तर – लियॉन ट्रॉट्स्की ने।

प्रश्न 42 (आसान). अक्टूबर क्रांति के दौरान विंटर पैलेस पर किस युद्धपोत ने बमबारी की थी?
उत्तर – अरोरा (Aurora) नामक युद्धपोत ने।

प्रश्न 43 (मध्यम). अक्टूबर 1917 में बोल्शेविक विद्रोह शुरू होने का तात्कालिक कारण क्या था?
उत्तर – अंतरिम सरकार द्वारा बोल्शेविक अखबारों के दफ़्तरों पर घेरा डालना और लेनिन को तख्तापलट का डर होना।

प्रश्न 44 (कठिन). जूलियन और ग्रेगोरियन कैलेंडर के अंतर को समझाते हुए बताइए कि अक्टूबर क्रांति वास्तव में किस तारीख को हुई थी?
उत्तर – रूस में जूलियन कैलेंडर ग्रेगोरियन से 13 दिन पीछे था। इसलिए रूस के हिसाब से जो 24 अक्टूबर की घटना थी, वह वर्तमान वैश्विक (ग्रेगोरियन) कैलेंडर के अनुसार 7 नवंबर को हुई थी।

» अक्टूबर के बाद के बदलाव और गृह युद्ध (1918-1920)

प्रश्न 45 (आसान). गृह युद्ध के दौरान बोल्शेविकों को किस रंग से जाना जाता था?
उत्तर – रेड्स (Reds)

प्रश्न 46 (आसान). 1918 में सेना के लिए चुनी गई नई सोवियत टोपी का नाम क्या था?
उत्तर – बुदियोनोव्का (Budyonnovka)

प्रश्न 47 (मध्यम). बोल्शेविकों के खिलाफ गृह युद्ध में 'व्हाइट्स' और 'ग्रीन्स' को विदेशी शक्तियों (जैसे फ्रांस, ब्रिटेन) ने समर्थन क्यों दिया?
उत्तर – क्योंकि ये देश पूँजीवादी थे और रूस में समाजवाद के फैलाव व प्रभाव को रोकना चाहते थे।

प्रश्न 48 (कठिन). रूस में अक्टूबर क्रांति के बाद असेंबली चुनाव हारने पर लेनिन ने क्या तर्क देकर असेंबली को बर्खास्त किया?
उत्तर – लेनिन का मानना था कि अनिश्चित माहौल में चुनी गई असेंबली के मुकाबले 'अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस' ज़्यादा लोकतांत्रिक और जन-प्रतिनिधि संस्था है।

» समाजवादी समाज का निर्माण और पंचवर्षीय योजनाएँ

प्रश्न 49 (आसान). सोवियत संघ में पहली दो पंचवर्षीय योजनाओं की समय-सीमा क्या थी?
उत्तर – पहली योजना 1927-1932 और दूसरी योजना 1933-1938 तक चली।

प्रश्न 50 (आसान). मैग्नीटोगोर्स्क शहर किस उद्योग के लिए प्रसिद्ध था?
उत्तर – स्टील (इस्पात) संयंत्र के निर्माण के लिए।

प्रश्न 51 (मध्यम). केंद्रीकृत नियोजन (Centralised Planning) से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अधिकारियों के माध्यम से 5 साल के आर्थिक लक्ष्य तय करना और कीमतें नियंत्रित करना।

प्रश्न 52 (कठिन). 'तेज़ औद्योगिक विकास की कीमत मज़दूरों ने चुकाई' – सोवियत रूस के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए।
उत्तर – औद्योगिक उत्पादन 100% बढ़ा लेकिन मैग्नीटोगोर्स्क जैसे शहरों में माइनस 40 डिग्री तापमान में कठिन हालात, खराब आवास और पहले ही साल 550 बार काम रुकने जैसी समस्याओं ने मज़दूरों का जीवन कठिन बना दिया।

» स्तालिनवाद और खेतों का सामूहिकीकरण (कोलखोज)

प्रश्न 53 (आसान). रूसी भाषा में सामूहिक खेतों को क्या कहा जाता था?
उत्तर – कोलखोज (Kolkhoz)

प्रश्न 54 (आसान). सोवियत संघ में संपन्न किसानों को किस नाम से जाना जाता था?
उत्तर – कुलक (Kulaks)

प्रश्न 55 (मध्यम). किसानों ने स्तालिन की सामूहिकीकरण नीति का विरोध किस प्रकार किया?
उत्तर – किसानों ने सामूहिक खेतों में जाने से मना किया और विरोध स्वरूप अपने मवेशियों व जानवरों को मार डाला, जिससे मवेशियों की संख्या एक-तिहाई घट गई।

प्रश्न 56 (कठिन). स्तालिन की सामूहिकीकरण नीति सोवियत समाज के लिए वरदान साबित हुई या अभिशाप? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
उत्तर – यह एक अभिशाप साबित हुई क्योंकि इससे कृषि उत्पादन बढ़ने के बजाय घट गया, 1930-33 में पड़े अकाल में 40 लाख से अधिक लोग मारे गए, और विरोध करने वाले लाखों निर्दोष किसानों को जेलों या श्रम शिविरों में भेज दिया गया।

» रूसी क्रांति और सोवियत संघ का वैश्विक प्रभाव

प्रश्न 57 (आसान). दुनिया भर की कम्युनिस्ट पार्टियों को एकजुट करने के लिए सोवियत संघ ने किस संगठन का गठन किया था?
उत्तर – कॉमिन्टर्न (Comintern - कम्युनिस्ट इंटरनेशनल)

प्रश्न 58 (आसान). भारत में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन किस दशक में हुआ था?
उत्तर – 1920 के दशक में

प्रश्न 59 (मध्यम). रवींद्रनाथ टैगोर को सोवियत संघ की यात्रा के दौरान कौन-सी बात सबसे अधिक प्रभावशाली लगी?
उत्तर – टैगोर को यह देखकर अचंभा हुआ कि सदियों से अनपढ़, लाचार और दबे-कुचले आम किसानों-मज़दूरों ने इतने कम समय में अज्ञानता को दूर कर आत्म-सम्मान और बराबरी हासिल कर ली थी।

प्रश्न 60 (कठिन). सोवियत मॉडल के वैश्विक प्रभाव के दो परस्पर विरोधी पहलुओं की समीक्षा कीजिए।
उत्तर – पहला पहलू सकारात्मक था, जिसने दुनिया भर के उपनिवेशों को साम्राज्यवाद के खिलाफ़ लड़ने और सामाजिक-आर्थिक समानता स्थापित करने की प्रेरणा दी। दूसरा पहलू नकारात्मक था, क्योंकि सोवियत संघ में तानाशाही, नागरिकों की स्वतंत्रता के दमन और राजनीतिक विरोधियों के उत्पीड़न के कारण वैश्विक स्तर पर इसकी भारी आलोचना भी हुई।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. फ्रांसीसी क्रांति के बाद यूरोप में सामाजिक पुनर्गठन के लिए कौन-कौन सी मुख्य विचारधाराएँ उभरीं और मताधिकार पर उदारवादियों व रैडिकलों के विचारों में क्या अंतर था?

› स्टेप 1: मुख्य तीन विचारधाराओं के नाम लिखें – उदारवादी (Liberals), रैडिकल (Radicals), और रूढ़िवादी (Conservatives)।

› स्टेप 2: उदारवादियों का मताधिकार पर दृष्टिकोण स्पष्ट करें – वे केवल संपत्तिधारी पुरुषों को वोट देने का अधिकार देना चाहते थे, सभी नागरिकों या महिलाओं को नहीं।

› स्टेप 3: रैडिकलों का दृष्टिकोण स्पष्ट करें – वे बहुमत आधारित शासन और महिला मताधिकार (Suffragette Movement) के पक्षधर थे।

› स्टेप 4: निष्कर्ष निकालें – उदारवादी नागरिक स्वतंत्रता तो चाहते थे पर पूर्ण लोकतंत्र नहीं, जबकि रैडिकल व्यापक सामाजिक समानता के पक्ष में थे।

उत्तर – मुख्य तीन धाराएँ उदारवादी, रैडिकल व रूढ़िवादी थीं। मताधिकार पर मुख्य अंतर यह था कि उदारवादी केवल संपत्तिवान पुरुषों को वोट देना चाहते थे, जबकि रैडिकल सभी आम जनता और महिलाओं को मताधिकार देने के पक्ष में थे।

उदाहरण 2. 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में यूरोप में औद्योगीकरण के कारण उत्पन्न दो मुख्य सामाजिक-आर्थिक समस्याओं और उनके संभावित समाधान की व्याख्या कीजिए।

› पहला कदम: औद्योगीकरण से उत्पन्न समस्याओं की पहचान करें – अत्यधिक लंबे कार्य-घंटे (12-16 घंटे), बहुत कम मज़दूरी, तथा शहरों में आवास व स्वच्छता की दयनीय स्थिति।

› दूसरा कदम: सामाजिक प्रभाव को समझें – पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं और बच्चों को भी बेहद कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता था।

› तीसरा कदम: समाधान का प्रयास – उदारवादी और रैडिकल विचारकों ने जन्मजात विशेषाधिकारों का विरोध किया और तर्क दिया कि मज़दूरों को शिक्षित व स्वस्थ बनाकर तथा व्यक्तिगत प्रयास को बढ़ावा देकर इन समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

उत्तर – औद्योगीकरण ने लंबे कार्य-घंटों और खराब जीवन-स्तर जैसी गंभीर समस्याएँ पैदा कीं, जिनका समाधान उदारवादी व रैडिकल विचारकों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, शिक्षा और श्रम के सम्मान को बढ़ावा देकर करने का प्रयास किया।

उदाहरण 3. कार्ल मार्क्स के अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों की स्थिति क्यों नहीं सुधर सकती थी?

› पहला, कारखानों में लगी पूँजी पर पूँजीपतियों (Capitalists) का निजी अधिकार था।

› दूसरा, कारखाने का सारा मुनाफा मजदूरों की दिन-रात की कड़ी मेहनत से पैदा होता था।

› तीसरा, पूँजीपति उस मुनाफे को मजदूरों में बाँटने के बजाय खुद संचित (accumulate) करते जाते थे।

› निष्कर्ष: इसलिए मार्क्स का मानना था कि जब तक निजी संपत्ति और पूँजीवाद खत्म नहीं होगा, मजदूरों की दशा नहीं सुधरेगी।

उत्तर – क्योंकि उत्पादन का सारा मुनाफा निजी मालिक की जेब में जाता था, मजदूरों को सिर्फ न्यूनतम मजदूरी मिलती थी।

उदाहरण 4. 19वीं सदी के उत्तरार्ध में यूरोप में समाजवाद के अंतर्राष्ट्रीय प्रसार के किन्हीं दो मुख्य कारणों और दो राजनीतिक परिणामों की व्याख्या कीजिए।

› पहला कारण: कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रेरित होकर मजदूरों ने समझा कि पूँजीवाद के खिलाफ लड़ाई अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ही जीती जा सकती है।

› दूसरा कारण: मजदूरों के काम के अनिश्चित घंटे और खराब जीवनस्थितियाँ, जिसके लिए उन्होंने संकट कोष और एकजुटता की ज़रूरत महसूस की।

› पहला परिणाम: 'द्वितीय इंटरनेशनल' जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था का गठन हुआ।

› दूसरा परिणाम: ब्रिटेन में लेबर पार्टी और जर्मनी में SPD जैसी राजनीतिक पार्टियों का उदय हुआ, जिन्होंने मजदूरों के हक में कानून बनवाए।

उत्तर – अंतर्राष्ट्रीय समन्वय के लिए 'द्वितीय इंटरनेशनल' का गठन हुआ और ब्रिटेन-जर्मनी में मजबूत मजदूर पार्टियाँ बनीं, जिन्होंने संसदीय राजनीति में मजदूरों की आवाज़ बुलंद की।

उदाहरण 5. 1914 के रूसी साम्राज्य में किसानों और मजदूरों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की तुलना कीजिए।

› स्टेप 1: कृषि और अर्थव्यवस्था – 85% आबादी खेती पर निर्भर; फ्रांस/जर्मनी (40-50%) की तुलना में बहुत अधिक।

› स्टेप 2: मजदूरों की स्थिति – सेंट पीटर्सबर्ग व मास्को में सीमित उद्योग; 10-15 घंटे की लंबी पाली; धातु मजदूरों का ऊँचा दर्जा और महिलाओं को कम वेतन।

› स्टेप 3: किसानों की विशेषता – सामंतों के प्रति सम्मान का अभाव; ज़मीन छीनने की चाह और 'मीर' (कम्यून) द्वारा भूमि का पुनर्वितरण।

उत्तर – रूस में कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था (85%) थी, मजदूर काम के लंबे घंटों और विभेदों में बँटे थे, जबकि किसान 'मीर' व्यवस्था के कारण स्वाभाविक रूप से एकजुट और विद्रोही स्वभाव के थे।

उदाहरण 6. बोल्शेविक और मेन्शेविक गुटों के बीच मुख्य वैचारिक अंतर क्या था?

› स्टेप 1: पार्टी का नाम लिखें - रशियन सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर्स पार्टी।

› स्टेप 2: बोल्शेविक (लेनिन) का पक्ष बताएं - सख्त अनुशासन, सदस्यों की संख्या और गुणवत्ता पर नियंत्रण।

› स्टेप 3: मेन्शेविक (मार्तोव) का पक्ष बताएं - सभी के लिए खुली सदस्यता और लोकतांत्रिक ढांचा।

उत्तर – बोल्शेविक गुट पार्टी में कड़ा अनुशासन और सीमित क्रांतिकारी सदस्य चाहता था, जबकि मेन्शेविक गुट सभी आम नागरिकों के लिए पार्टी के दरवाजे खुले रखने का पक्षधर था।

उदाहरण 7. प्रश्न: 1905 की क्रांति के मुख्य कारण और इसके तात्कालिक परिणाम क्या थे?

› स्टेप 1 (कारण): मजदूरों की दयनीय स्थिति, काम के लंबे घंटे, घटती वास्तविक आय और जार का निरंकुश शासन।

› स्टेप 2 (तात्कालिक घटना): पादरी गैपॉन के नेतृत्व में मजदूरों के शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर पुलिस की गोलीबारी ('खूनी रविवार')।

› स्टेप 3 (परिणाम): देशव्यापी हड़तालें हुई, 'यूनियन ऑफ यूनियन्स' बनी और ज़ार को 'ड्यूमा' (संसद) का गठन स्वीकार करना पड़ा।

उत्तर – 1905 की क्रांति का मुख्य कारण आर्थिक बदहाली और 'खूनी रविवार' की घटना थी, जिसके परिणामस्वरूप रूस में पहली बार परामर्शदाता संसद (ड्यूमा) का गठन हुआ।

उदाहरण 8. प्रथम विश्वयुद्ध ने रूस में ज़ारशाही के पतन की ज़मीन कैसे तैयार की? मुख्य कारणों का विश्लेषण कीजिए।

› पहला कदम: सैन्य विफलता समझाएँ – 1914-1916 के दौरान 70 लाख सैनिकों की मौत और 30 लाख शरणार्थियों की समस्या से सेना और जनता का मनोबल टूटा।

› दूसरा कदम: आर्थिक तबाही रेखांकित करें – श्रमबल की कमी से उद्योग बंद हुए, बाल्टिक मार्ग बंद होने से आपूर्ति रुकी, और सारा अनाज मोर्चे पर भेजने से शहरों में अकाल पड़ा।

› तीसरा कदम: राजनीतिक अलोकप्रियता जोड़ें – ज़ार ने ड्यूमा की सलाह लेना बंद कर दिया और रानी ज़ारीना व रासपुतिन के हस्तक्षेप ने ज़ारशाही को पूरी तरह अलोकप्रिय बना दिया।

उत्तर – सैन्य पराजय, भीषण खाद्यान्न संकट और ज़ार के निरंकुश व अलोकप्रिय फैसलों के सम्मिलित प्रभाव ने जनता के असंतोष को चरम पर पहुँचाकर ज़ारशाही के पतन की नींव रखी।

उदाहरण 9. फरवरी 1917 की क्रांति के उन तीन मुख्य कारणों और परिणामों का विश्लेषण कीजिए जिन्होंने रूस में ज़ारशाही का अंत किया।

› कारण 1: भीषण ठंड और युद्ध के कारण शहरों में रोटी और अनाज की अत्यधिक किल्लत।

› कारण 2: 25 फरवरी को ज़ार द्वारा ड्यूमा को बर्खास्त करने से जनता और नेताओं में असंतोष।

› कारण 3: सैनिकों का प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने से इनकार करना और मज़दूरों के साथ मिलना।

› परिणाम: 2 मार्च 1917 को ज़ार निकोलस द्वितीय का पदत्याग और देश चलाने के लिए अंतरिम सरकार का गठन।

उत्तर – अनाज संकट, ड्यूमा की बर्खास्तगी और सेना के विद्रोह के संयुक्त दबाव के कारण 2 मार्च 1917 को ज़ार ने पदत्याग किया, जिससे रूस में निरंकुश राजशाही समाप्त हुई और अंतरिम सरकार बनी।

उदाहरण 10. प्रश्न: 1917 में रूस लौटने पर लेनिन की 'अप्रैल थीसिस' की तीन मुख्य माँगों की व्याख्या कीजिए और बताइए कि यह इतिहास में क्यों महत्वपूर्ण थी?

› कदम 1: पृष्ठभूमि लिखें – अप्रैल 1917 में व्लादिमीर लेनिन देश-निकाल से रूस वापस लौटे और उन्होंने अंतरिम सरकार की नीतियों का विरोध किया।

› कदम 2: तीन माँगें क्रम से लिखें – 1. प्रथम विश्व युद्ध तुरंत समाप्त किया जाए। 2. ज़मीन किसानों को सौंप दी जाए। 3. बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया जाए।

› कदम 3: प्रभाव और निष्कर्ष – इन माँगों ने बोल्शेविक पार्टी को आम जनता और किसानों का पूर्ण समर्थन दिलाया, जिससे अक्टूबर क्रांति का आधार तैयार हुआ।

उत्तर – लेनिन की अप्रैल थीसिस रूस में युद्ध समाप्ति, ज़मीन के पुनर्वितरण और बैंकों के राष्ट्रीयकरण की तीन माँगें थीं, जिन्होंने बोल्शेविक क्रांति की दिशा तय की।

उदाहरण 11. प्रश्न: अक्टूबर 1917 की क्रांति के मुख्य चरणों और उसके अंतिम परिणाम का संक्षेप में विश्लेषण कीजिए।

› चरण 1: लेनिन ने पेत्रोग्राद सोवियत और बोल्शेविक पार्टी को सत्ता पर कब्ज़ा करने के लिए तैयार किया।

› चरण 2: लियॉन ट्रॉट्स्की के नेतृत्व में 'सैनिक क्रांतिकारी समिति' का गठन किया गया।

› चरण 3: 24 अक्टूबर को विद्रोह शुरू हुआ; 'अरोरा' युद्धपोत ने विंटर पैलेस पर घेराबंदी की और मंत्रियों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

› परिणाम: अंतरिम सरकार गिर गई और रूस में बोल्शेविक (कम्युनिस्ट) सत्ता स्थापित हुई।

उत्तर – 24 अक्टूबर 1917 को बोल्शेविकों ने सैनिक क्रांतिकारी समिति के माध्यम से अंतरिम सरकार को उखाड़ फेंका और रूस में समाजवादी शासन की नींव रखी।

उदाहरण 12. रूसी गृह युद्ध (1918-1920) में बोल्शेविकों की जीत के मुख्य कारणों का विश्लेषण कीजिए।

› पहला कदम: गृह युद्ध के तीन मुख्य गुटों (रेड्स, ग्रीन्स, व्हाइट्स) की पहचान करें।

› दूसरा कदम: यह समझें कि 'व्हाइट्स' (ज़मींदार समर्थक) ने किसानों पर अत्याचार किए, जिससे किसानों का समर्थन बोल्शेविकों ('रेड्स') को मिला।

› तीसरा कदम: गैर-रूसी राष्ट्रवादियों और मुस्लिम सुधारकों (जदीदियों) का बोल्शेविकों को समर्थन मिलना।

› चौथा कदम: बोल्शेविकों का संगठित सैनिक नेतृत्व (ट्रॉट्स्की द्वारा Red Army का कुशल संचालन)।

उत्तर – बोल्शेविकों की संगठित सेना (Red Army), किसानों का 'व्हाइट्स' के खिलाफ गुस्सा और गैर-रूसी समूहों के समर्थन से बोल्शेविकों ने 1920 तक गृह युद्ध जीत लिया।

उदाहरण 13. रूस में पंचवर्षीय योजनाओं के लागू होने के दो प्रमुख सकारात्मक और दो नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

› स्टेप 1 (सकारात्मक): 1929 से 1933 के बीच तेल, कोयला और स्टील के उत्पादन में 100% की भारी वृद्धि हुई। नए औद्योगिक शहर बसे।

› स्टेप 2 (सकारात्मक): शिक्षा का विस्तार हुआ, कामगारों के लिए विश्वविद्यालय और बालवाड़ियों (Creches) की व्यवस्था की गई।

› स्टेप 3 (नकारात्मक): निर्माण कार्य के अत्यधिक दबाव के कारण मज़दूरों की कार्यस्थितियाँ बेहद खराब रहीं (जैसे माइनस 40 डिग्री में कड़ाके की ठंड)।

› स्टेप 4 (नकारात्मक): सरकारी संसाधन सीमित होने के कारण इन सुविधाओं का लाभ सभी मज़दूरों को समान रूप से नहीं मिल पाया।

उत्तर – पंचवर्षीय योजनाओं ने सोवियत संघ को एक शक्तिशाली औद्योगिक राष्ट्र तो बनाया, लेकिन इसकी भारी कीमत वहाँ के मज़दूरों को अपनी कठोर कार्यस्थितियों से चुकानी पड़ी।

उदाहरण 14. स्तालिन की सामूहिकीकरण नीति (Collectivisation Policy) क्या थी और इसके दो मुख्य परिणाम क्या हुए?

› परिभाषा: 1929 में स्तालिन द्वारा छोटे-छोटे निजी खेतों को मिलाकर सामूहिक खेत (कोलखोज) बनाने की नीति।

› कारण: शहरों में अनाज की कमी को दूर करना और कुलकों (अमीर किसानों) के वर्चस्व को खत्म करना।

› परिणाम 1: किसानों द्वारा ज़बरदस्त विरोध, विरोध स्वरूप अपने मवेशियों को मारना (1/3 मवेशी खत्म)।

› परिणाम 2: कृषि उत्पादन में गिरावट और 1930-33 का विनाशकारी अकाल जिसमें 40 लाख से अधिक लोग मारे गए।

उत्तर – सामूहिकीकरण निजी ज़मीन को 'कोलखोज' में बदलने की ज़बरदस्ती की नीति थी, जिसके कारण किसानों का भारी दमन हुआ और सोवियत संघ में भयानक अकाल पड़ा।

उदाहरण 15. प्रश्न: रूसी क्रांति ने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय विचारकों को किस प्रकार प्रभावित किया? संक्षेप में समझाइए।

› स्टेप 1: कॉमिन्टर्न और पार्टी गठन – 1920 के दशक में रूसी क्रांति से प्रेरित होकर भारत में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ और भारतीय क्रांतिकारी सोवियत विचारों के संपर्क में आए।

› स्टेप 2: भारतीय विचारकों की प्रतिक्रिया – जवाहरलाल नेहरू और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे नेताओं ने सोवियत संघ की यात्रा की और वहाँ आम जनता के उत्थान तथा शिक्षा-समानता के प्रयासों की तारीफ की।

› स्टेप 3: क्षेत्रीय साहित्य पर प्रभाव – हिंदी (आर.एस. अवस्थी, एस.डी. विद्यालंकार), बंगाली, मराठी और तमिल जैसी

भाषाओं में रूसी क्रांति और लेनिन पर बहुसंख्या में पुस्तकें लिखी गईं।

उत्तर – उत्तर: रूसी क्रांति ने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को सामाजिक समानता और आर्थिक न्याय का दृष्टिकोण दिया, जिससे भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन की नींव पड़ी और क्षेत्रीय भाषाओं में इसके समर्थन में व्यापक साहित्य लिखा गया।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• बोर्ड परीक्षा में 'उदारवादी बनाम रैडिकल' का अंतर सीधे 3 या 5 अंकों के प्रश्न में पूछा जाता है। मताधिकार वाले बिंदु को स्पष्ट रूप से हाइलाइट करें!

• परीक्षार्थी ध्यान दें: 'औद्योगीकरण के सामाजिक प्रभाव' पर उत्तर लिखते समय हमेशा कार्य-घंटे, मज़दूरी, और आवास – इन तीन बिंदुओं को अलग-अलग हेडिंग में स्पष्ट रूप से लिखें।

• बोर्ड परीक्षा में 'कार्ल मार्क्स का कम्युनिस्ट विचार' 3 या 5 अंकों के दीर्घ उत्तरीय प्रश्न में बार-बार पूछा जाता है। पूँजीपति, मुनाफा और मजदूर संघर्ष – ये तीन शब्द ज़रूर लिखें!

• बोर्ड परीक्षा में 'द्वितीय इंटरनेशनल' और यूरोप की मुख्य समाजवादी पार्टियों (SPD, लेबर पार्टी) के नाम 2-अंक वाले प्रश्नों में अक्सर पूछे जाते हैं, इन्हें अच्छे से याद रखें।

• बोर्ड परीक्षा में 'मीर व्यवस्था' और 'रूसी किसानों की विशिष्टता' पर 3 अंकों का प्रश्न अक्सर पूछा जाता है – इसे बिंदुवार उत्तर में ज़रूर लिखें।

• यह प्रश्न क्लास 9 बोर्ड/वार्षिक परीक्षा में 3 अंकों के लिए 'अंतर स्पष्ट कीजिए' के रूप में बहुत बार आता है।

• परीक्षार्थी ध्यान दें: 'खूनी रविवार की घटना' पर 3 या 5 अंकों का सीधा प्रश्न अक्सर आता है। इसमें पादरी गैपॉन, विंटर पैलेस, और ड्यूमा गठन तीनों बिंदुओं को क्रम से ज़रूर लिखें।

• बोर्ड परीक्षा में उत्तर लिखते समय सैन्य, आर्थिक और राजनीतिक तीनों पहलुओं को अलग-अलग बिंदुओं में स्पष्ट लिखें, इससे पूरे अंक मिलते हैं।

• बोर्ड परीक्षा में अगर 'फरवरी क्रांति की घटनाक्रम तिथि अनुसार' पूछी जाए, तो 23 फरवरी (हड़ताल), 25 फरवरी (ड्यूमा बर्खास्त), 27 फरवरी (सोवियत गठन) और 2 मार्च (ज़ार का पदत्याग) की तारीखें ज़रूर लिखें।

• यह 3 या 5 अंक का एक बेहद पसंदीदा प्रश्न है – तीनों माँगों को हमेशा अलग-अलग बिंदुओं (points) में स्पष्ट लिखकर आएँ।

• बोर्ड परीक्षा में उत्तर लिखते समय 'सैनिक क्रांतिकारी समिति', 'लियॉन ट्रॉट्स्की', और 'अरोरा युद्धपोत' जैसे मुख्य शब्दों को रेखांकित (underline) ज़रूर करें।

• बोर्ड परीक्षा में 'रेड्स, ग्रीन्स और व्हाइट्स' पर 3 अंक का सीधा प्रश्न आता है; तीनों की परिभाषा और गृह युद्ध के परिणाम स्पष्ट लिखें।

• बोर्ड परीक्षा में अगर 'सोवियत पंचवर्षीय योजनाओं के प्रभाव' पर प्रश्न आए, तो उत्तर में आर्थिक वृद्धि और मज़दूरों की स्थिति – दोनों पहलुओं को संतुलित रूप से लिखें।

• बोर्ड परीक्षा में 'कोलखोज पर टिप्पणी' या 'सामूहिकीकरण के परिणाम' पर 3 या 5 अंक का प्रश्न अक्सर पूछा जाता है। अकाल के आंकड़े (40 लाख) और 'कुलक' शब्द का उल्लेख उत्तर में ज़रूर करें।

• परीक्षा में यदि सोवियत संघ के वैश्विक प्रभाव पर प्रश्न आए, तो केवल सकारात्मक प्रभाव मत लिखिए; नेहरू-टैगोर के विचारों के साथ तानाशाही की आलोचना वाला बिंदु लिखना अनिवार्य है।

एक नज़र में रिवीज़न

› उदारवादी = सीमित वोट; रैडिकल = सबको वोट/महिला अधिकार; रूढ़िवादी = धीमा बदलाव।

› औद्योगीकरण से लंबे कार्य-घंटे व कम मज़दूरी की समस्या आई, जिसे उदारवादियों ने व्यक्तिगत प्रयास से सुलझाना चाहा।

› कार्ल मार्क्स: पूँजीवाद का अंत और समाज के साझा स्वामित्व वाला कम्युनिस्ट समाज।
› द्वितीय इंटरनेशनल और लेबर पार्टी/SPD के गठन से समाजवाद यूरोप भर में फैला।
› रूसी साम्राज्य (1914): 85% कृषक आबादी, 'मीर' कम्यून द्वारा भूमि पुनर्वितरण और विभाजित मजदूर वर्ग।
› बोल्शेविक (लेनिन) = अनुशासित-सीमित सदस्य; मेन्शेविक (मार्तोव) = सभी के लिए खुली पार्टी।
› खूनी रविवार (1905) से क्रांति की शुरुआत हुई और रूसी संसद 'ड्यूमा' का गठन हुआ।
› विश्वयुद्ध में भारी क्षति व भुखमरी ने ज़ारशाही के खिलाफ जन-आक्रोश चरम पर पहुँचाया।
› 2 मार्च 1917 को सैनिकों और मज़दूरों के संयुक्त विद्रोह के कारण ज़ार निकोलस II ने पदत्याग किया।
› अप्रैल थीसिस: लेनिन की 3 माँगें – युद्ध अंत, भूमि वितरण, बैंक राष्ट्रीयकरण।
› 24 अक्टूबर 1917: ट्रॉट्स्की के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने अंतरिम सरकार को उखाड़ फेंका।
› अक्टूबर बाद: राष्ट्रीयकरण, एक-दलीय शासन; गृह युद्ध (1918-20): रेड्स (बोल्शेविक) की जीत।
› पंचवर्षीय योजनाओं से औद्योगिक विकास तेज़ी से हुआ, पर मज़दूरों की कार्यस्थितियाँ खराब रहीं।
› कोलखोज: स्तालिन की सामूहिक खेती नीति, जिसके विरोध और कड़ाई से 40 लाख लोग अकाल में मरे।
› रूसी क्रांति से वैश्विक स्तर पर कॉमिन्टर्न बना, भारत में कम्युनिस्ट पार्टी गठित हुई।